

॥ श्री वीतरामाय नमः ॥

विशद
अक्षय फल (सौभाग्य दशमी)
पूजा व्रत विधान

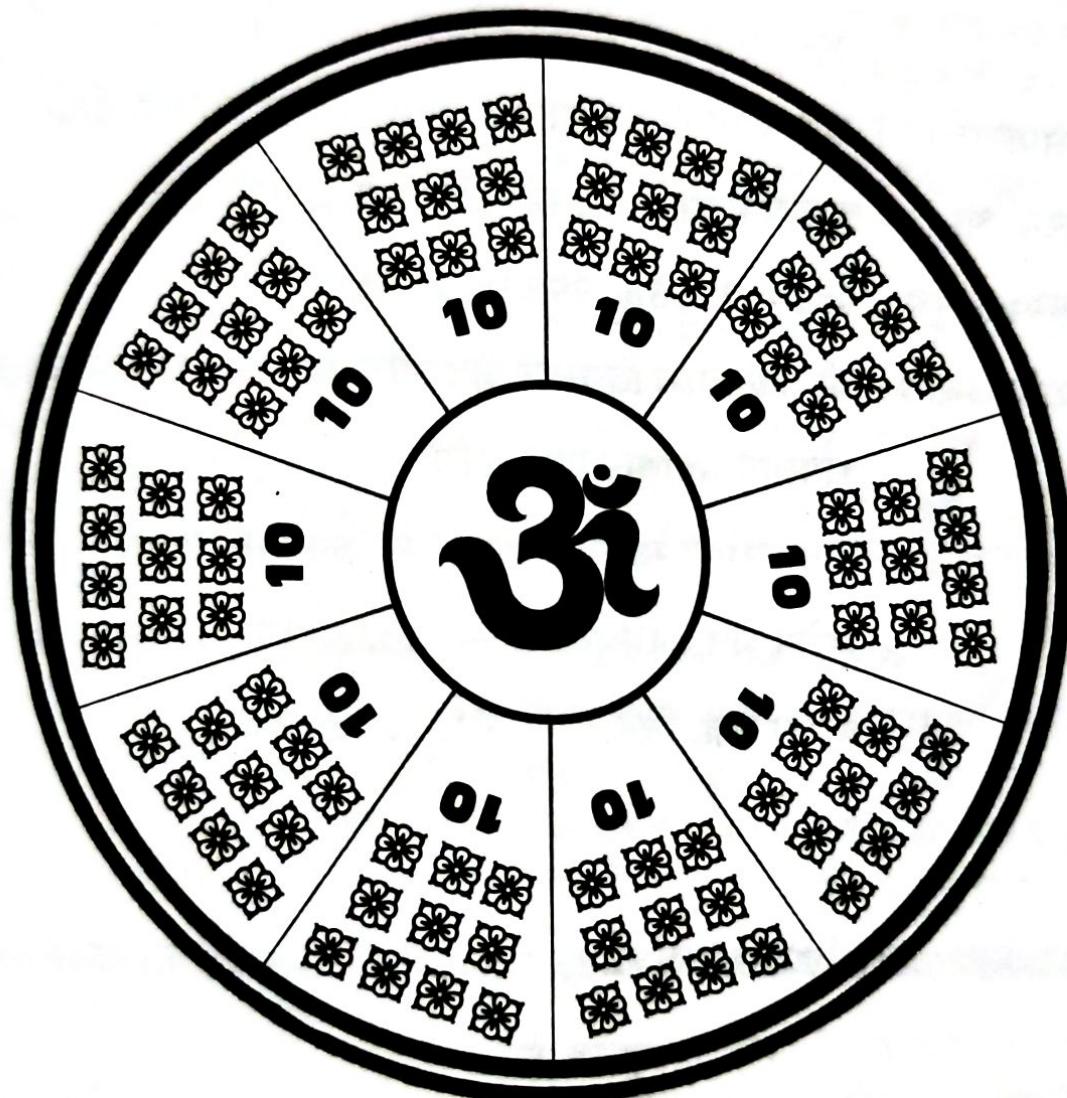


रचयिता

प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री विशद सागरजी महाराज

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

विशद
अक्षय फल (सौभाग्य दशमी)
व्रत विधान
विधान माण्डला



रचयिता
प.पू. आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

अक्षय फल (सौभाग्य दशमी) व्रत कथा

**ॐकार हृदय धर्म, मरम्बति को शिरनाय ।
अक्षयदशमी व्रत कथा, भाषा कहु बनाय ॥**

इसी राजगृह नगर में मेघनाद नाम के राजा की रानी पृथ्वीदेवी अत्यन्त रूप और शीलवान थी, परंतु कोई पूर्व पाप के उदय से पुत्रविहीन होने से सदा दुःखी रहती थी। एक दिन अति आतुर हो वह कहने लगी—हे भर्तार! क्या कभी मैं कुलमण्डन स्वरूप बालक को अपनी गोद में खिलाऊंगी? क्या कभी ऐसा शुभोदय होगा कि जब मैं पुत्रवती कहाऊँगी।

अहा ! देखो, संसार में, स्त्रियों को पुत्र की कितनी अभिलाषा होती है ? वे इस ही इच्छा से दिनरात व्याकुल रहती अनेकों उपचार करती हैं और कितनी ही तो (जिन्हें धर्म का ज्ञान नहीं है) अपना कुलाचरण भी छोड़कर धर्म तक से गिर जाती हैं। यह सुनकर राजा ने रानी से कहा—प्रिये ! चिन्ता न करो, पुण्य के उदय से सब कुछ होता है। हम लोगों ने पूर्व जन्मों में कोई ऐसा ही कर्म किया होगा कि जिसके कारण निःसंतान हो रहे हैं। इस प्रकार वे राजा रानी परस्पर धैर्य बन्धाते कालक्षेप करते थे।

एक दिन उनके शुभोदय से श्री शुभंकर नाम मुनिराज का शुभागमन हुआ, सो राजा रानी उनके दर्शनार्थ गये। उनकी वन्दना करने के अनन्तर धर्म श्रवण करके राजा ने पूछा—

हे प्रभु ! आप त्रिकाल ज्ञानी हैं, आपको सब पदार्थ दर्पणवत प्रतिभाषित होते हैं, सो कृपाकर यह बताईये कि किस कारण से मेरे घर पुत्र नहीं होता है ? तब श्री गुरु ने भवांतर की कथा विचार कर कहा—हे राजा ! पूर्व जन्म में इस तुम्हारी रानी ने मुनिदान में अन्तराय किया था, इसी कारण से तुम्हारे पुत्र की अन्तराय हो रही हैं। तब राजा ने कहा—प्रभु ! कृपया कोई यत्न बताइये, कि जिससे इस पापकर्म का अन्त आवे।

यह सुनकर श्री मुनिराज बोले—वत्स ! तुम अक्षय निधि दशमी व्रत करो। श्रावण सुदी दशवीं को प्रोष्ठ करके श्री जिनमंदिर में जाकर भाव सहित पूजन विधान करो, पंचामृताभिषेक करो और “ॐ ह्वं अक्षयनिधि प्रदायक श्री ऋषभदेवाय नमः” इस मंत्र का जाप्य करो। यह व्रत दश वर्ष तक करके उद्यापन करों, विद्यादान देवो, अनाथों की रक्षा करो जिससे शीघ्र ही पाप का नाश हो सातिशय पुण्य लाभ हो इत्यादि विधि सुनकर राजा रानी आए और विधिपूर्वक व्रत पालन करके उद्यापन किया।

**दोहा — अक्षय फल दशमी सुव्रत, करे भाव के साथ ।
“विशद” मोक्ष फल पाय वह, बने श्री का नाथ ॥**

सो इस व्रत के महात्म्य तथा पूर्व पाप के क्षय होने से राजा को सात पुत्र और पांच कन्याएं हुईं। इस प्रकार कितनेक कालतक राजा दया धर्म को पालन करते हुए मनुष्योचित सुख भोगते रहे। पश्चात् समाधिमरण करके पहिले स्वर्ग में देव हुए और वहां से चयकर मनुष्य भव लेकर मोक्षपद प्राप्त किया। इस प्रकार और भव्य जीव यदि श्रद्धा सहित यह व्रत पालेंगे तो उन्हें भी उत्तमोत्तम सुखों की प्राप्ति होवेगी।

अक्षयदशमी व्रत थकी, घेनाद नप सार।

'दीप रहीं पंचम गती, नमून्त्रियोग सम्हार॥

संकलन - मुनिविशाल सागर

स्तवन

सौभाग्यदशमी व्रत विशद, करते जो भविलोग।

ऋद्धि सिद्धि उन गृह वसे, श्री काहो संयोग॥11॥

श्रावण शुक्ला दशें को, करते हैं उपवास।

विज्ञ सभी कटते तुरत, बनें शत्रु भी दास॥12॥

छोड़ विषय सर्वन्दिय के, भोजन चार प्रकार।

निष्कषाय धारें विरत, धरें शुद्ध आचार॥13॥

विषयों से मुख मोड़कर, छोड़ सर्व आरम्भ।

करते हैं यह व्रत सदा, शुद्ध चित्त प्रारम्भ॥14॥

करे वर्ष दश व्रत विशद, फिर उद्यापन जान।

मुक्ती फलकारी कहा, व्रत यह सुख की खान॥15॥

यथा शक्ति मण्डल रचें, करके विशद विधान।

दान चतुर्विधि भी करें, करें शास्त्र का दान॥16॥

अन्य कार्य ऐसें करें, बढ़े धर्म श्रद्धान।

देश जाति कुल का सदा, होवे अति सम्मान॥17॥

उद्यापन ना कर सके, कभी शक्ति अनुसार।

व्रत दुगुना पालन करे, रहा ग्रन्थ का सार॥18॥

धाव सहित जिन देव पद, जो जन करें प्रणाम।

जिन अर्चा व्रत जो धरे, उनके बनते काम॥19॥

रत्नत्रय को धार कर, सम्यक तप को धार।

शिव पथ के राही बने, बनकर के अनगार॥20॥

कर्म निर्जरा शीघ्र कर, पावें शिव सोपान।

अल्प काल में हो विशद, उनका भी निर्वाण॥21॥



अक्षय फल पूजा (सौभाग्य दशमी व्रत पूजा)

स्थापना

शिव सुख प्राणी के लिए, रहा इष्ट शुभकार ।

अक्षय निधि व्रत धारकर, पाना भव दधि पार ॥

व्रतारात्म्य श्री ऋषभ जिन, का करते गुणगान ।

आवण सुदि दशमी तिथी, करे विशद गुणगान ॥

दोहा— शुभ सौभाग्य दशमी विशद, पावन परम पवित्र ।

पूजा जिसकी भाव से, करो सभी मिल मित्र ॥

ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्म अक्षयनिधि महाव्रताय । अत्र अवतर—अवतर संवौषट् आह्वाननम् । ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्म अक्षयनिधि महाव्रताय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः तः स्थापनम् । ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्म अक्षयनिधि महाव्रताय अत्र मम सन्निहतो भव—भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(ज्ञानोदय छन्द)

निर्मल नीर चढ़ाकर भी प्रभु, हमने भव दुख पाए हैं ।

जन्म जरादिक व्याधि नाश हम, करने को प्रभु आए हैं ॥

यह सौभाग्य दर्शनों की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान ।

हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥१॥

ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय जलम् निर्वपामिति स्वाहा ।

चन्दन में केसर धिसकर के, सदा चढ़ाते आए हैं ।

भव सन्ताप नशाने के शुभ, हमने भाव जगाए हैं ।

यह सौभाग्य दर्शनों की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान ।

हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥२॥

ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय चन्दनम् निर्वपामिति स्वाहा ।

धोकर के तन्दुल सुवासमय, चरणों सदा चढ़ाए हैं ।

भव सिन्धू को पार करें, अक्षय पद पाने आए हैं ॥

यह सौभाग्य दर्शनों की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान ।

हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥३॥

ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय अक्षतम् निर्वपामिति स्वाहा ।

काम कषाय परिग्रह पाके, भव के रोग बढ़ाए हैं ।

पुष्ट चढ़ाकर काम रोग की, बाधा हरने आए हैं ॥

यह सौभाग्य दर्शनों की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान ।

हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥४॥

ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय पुष्टं निर्वपामिति स्वाहा ।

रसंपूरित नैवेद्य बनाकर, हमने बहुत चढ़ाए हैं।
 क्षुधा रोग हो नाश हमारा, विशद भावना भाए हैं ॥
 यह सौभाग्य दर्शन की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान।
 हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥५॥

ऊँ हीं अहं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।
 स्वर्ण रजत के दीप अनेकाँ, घृतपय सदा जलाए हैं।
 मोह तिमिर छाया आनादि जो, उसको हरने आए हैं ॥
 यह सौभाग्य दर्शन की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान।
 हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥६॥

ऊँ हीं अहं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।
 मलयागिरि की धूप सुगन्धित, हमने सदा जलाई है।
 कर्म नाश करने की सुधि अब, मन में मेरे आई है ॥
 यह सौभाग्य दर्शन की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान।
 हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥७॥

ऊँ हीं अहं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय धूपं निर्वपामिति स्वाहा।
 पुण्यपाप के फल भव-भव में, सदा शुभाशुभ पाए हैं।
 मोक्ष महाफल पाने को फल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं ॥
 यह सौभाग्य दर्शन की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान।
 हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥८॥

ऊँ हीं अहं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय फलम् निर्वपामिति स्वाहा।
 जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल लाए हैं।
 अर्घ्य चढ़ाकर पद अनर्घ्य शुभ, पाने को हम आए हैं ॥
 यह सौभाग्य दर्शन की पूजा, अक्षय निधि व्रत कही महान।
 हम सौभाग्य जगाने प्रभु की, अर्चा करते मंगलगान ॥९॥

ऊँ हीं अहं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा- पूरी होवे कामना, नाथ! आपके द्वार।
 अतः आपके पद युगल, देते शांतीधार ॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- त्रिभुवन पति त्रयलोक में, शुभ फल के दातार।
 पुष्पांजलि करते चरण, कर दो भव से पार ॥
 ॥ परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा- अक्षयनिधि द्वत धारते, कटे कर्म जंजाल ।
विशद भाव से हम यहाँ, गाते हैं जयमाल ॥
(दीरचन्द)

जो शुद्धात्म भावना भाते, वे ही पाते पद निर्वाण ।
अक्षय सौख्य प्राप्त करते वे, करें आत्मा का कल्याण ॥
मंगल भाव बनाकर के जो, करते हैं जिन का गुणगान ।
परम शांत रस अक्षय निधि के, स्वामी बनते महति महान् ॥
विषय विरक्त जीव सम्यक्त्वी, सोलह कारण भाव विशेष ।
भाकर बन्ध करें तीर्थकर, प्रकृति का जो पुण्य जिनेश ॥
शुद्ध आत्मा में अपनापन, यही कहा सम्यक्त्व महान् ।
इससे जो विपरीत भाव है, रहा मोह मिथ्यात्म निधान ॥
निर्विकार निश्चल परिणति के, जो विरुद्ध वह दुख की खान ।
गुण स्थान बारह में होता, मोह क्षोभ का पूर्ण निदान ॥
है सम्यक् चारित्र आत्ममय, जो अनन्त गुण से परिपूर्ण ।
जो प्रकाश चैतन्य पुंज का, परम तेजमय सुख आपूर्ण ॥
परिणति साम्य भावमय होतो, होता है सम्यक् चारित्र ।
रत्नत्रय ध्वज लहराता तव, अन्तरंग में परम पवित्र ॥
“चारित्रं खलु धर्मो” का, तात्पर्य पूर्ण निज में विश्राम ।
मोह क्षोभ से रहित साम्य, भावों का आलय धूम धाम ॥
जुड़ते ही अपने स्वभाव से, हुआ हृदय आनन्द महान् ।
शुद्ध ज्ञान घन वर्षा पाई, होने लगे कर्म अवशान ॥

पूर्ण अर्थ अर्पित करते हम, श्री जिनेन्द्र के चरणों आज ।
दोहा- भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन पालते सिद्ध समाज ॥
जिन चरणाम्बुज में विशद, बन्दन करें त्रिकाल ।
भाते हैं हम भावना, कटे कर्म जंजाल ॥

ॐ ह्रीं अहं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षयनिधि
महाव्रताय पूर्णार्थ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।
(घन्नानन्द)

जय-जय जिन गुरुबर, परं सुखाकर, गुण निधान कलि मलहारी ।
जय इन्द्र सुभूषण, अपगत दूषण, रची विशद मंगलकारी ॥
॥ इत्याशीर्वादः ॥

(प्रथम कोष्ठ)

जन्म के दस अतिशय सम्बन्धी अर्थ

दोहा - दश अतिशय प्रभु जन्म से, पावं पहाति पहान ।

अर्थ चक्षा जिनका यहाँ, करते हम गुणगान ॥

(प्रथम कोष्ठोपरि पुष्टांजलि क्षिपेत्)

(जोगीरामा छन्द)

'स्वेदरहित' तन जानो अनुपम, जन-जन का मन मोहे ।

प्रभु के जन्म समय से अतिशय, शुभ तन में यह सोहे ॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।

भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें ॥१॥

ॐ हीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्व. स्वाहा ।

गर्भ से जन्मे हैं माता के, फिर भी निर्मल गाये ।

'मल मूत्रादिक रहित' देह प्रभु, अतिशय पावन पाये ॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।

भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥२॥

ॐ हीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्व. स्वाहा ।

तन का 'रुधिर श्वेत' है अनुपम, अतिशय पावन गाया ।

रुधिर लाल नहि यह शुभ अतिशय, जन्म समय का पाया ॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।

भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥३॥

ॐ हीं श्वेतरुधिर सहजातिशयधारक श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्व. स्वाहा ।

तन सुडोल आकार मनोहर, 'समचतुष्क' बतलाया ।

जिस अवयव का माप है जितना, उतना ही मन भाया ॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।

भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥४॥

ॐ हीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्व. स्वाहा ।

'वज्रवृषभनाराच' संहनन, जिनवर तन में पाते ।

गणधरादि नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगाते ॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।

भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें ॥५॥

ॐ हीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्व. स्वाहा ।

कामदेव का रूप लजावे, जिन प्रभु तन के आगे ।
 'अतिशय रूप' मनोहर प्रभु का, देखत मैं शुभलागे ॥
 सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।
 भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें ॥६ ॥

ॐ हीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 परम 'सुगंधित तन' है प्रभु का, अनुपम महिमाकारी ।
 अन्य सुरभि नहिं है इस जग में, प्रभु तन सम मनहारी ॥
 सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।
 भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें ॥७ ॥

ॐ हीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 एक हजार आठ शुभलक्षण', प्रभु के तन में सोहें ।
 अद्भुत महिमाशाली जिनवर, त्रिभुवन का मन मोहे ॥
 सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।
 भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें ॥८ ॥

ॐ हीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 तुलना रहित' अतुलबल' प्रभु के, अतिशय तन में गाया ।
 इन्द्र चक्रवर्ती से अद्भुत, शक्ति मय बतलाया ॥
 सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।
 भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥९ ॥

ॐ हीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 'हितमितप्रियवचन' अमृत सम, प्रभु के होते भाई ।
 त्रिभुवन के प्राणी सुनते हों, मंत्र मुग्ध सुखदायी ॥
 सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।
 भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥१० ॥

ॐ हीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 दश अतिशय हैं जन्म के, पाते हैं भगवान ।
 जिन के चरणों में विशद करते हम गुणगान ॥११ ॥

ॐ हीं जन्मसमये दस अतिशयधारक श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 (द्वितीय कोष्ठ)

ज्ञान के दस अतिशय सम्बन्धी अर्घ्य

दोहा - अतिशय दश पावें प्रभू, जगते केवल ज्ञान ।
 जिनकी अर्चा जो करें, पावें शिव सोपान ॥
 ॥ द्वितीय कोष्ठोपरि पुष्पाजलि क्षिपेत् ॥

(चाल छन्द)

होवे सुभक्षिता भाई, सौ योजन में सुखदायी ।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥१॥

ॐ ह्रीं गव्यूतिशत् चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

हो गगन गमन शुभकारी, इस जग में मंगलकारी ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥२॥

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सहित श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

प्रभु के मुख चार दिखावें, भवि प्राणी दर्शन पावें ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥३॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशय सहित श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
होते अदया के त्यागी, तीर्थकर जिन बड़भागी ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥४॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सहित श्रीतीर्थकरजिनेन्द्राय अर्घ्यनिर्व. स्वाहा ।
उपसर्ग नहीं हो पावें, जब केवल ज्ञान जगावें ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥५॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

नाहोते कवलहारी, केवल ज्ञानी अनगारी ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥६॥

ॐ ह्रीं कवलहार सहजातिशय सहित श्रीतीर्थकरजिनेन्द्राय अर्घ्यनिर्व. स्वाहा ।
प्रभु सब विद्याएँ पाए, ईश्वर अतएव कहावे ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥७॥

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

नख केश वृद्धि नापाते, जब केवल ज्ञान जगाते ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥८॥

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

अनिमिष दृग पावें स्वामी, प्रभु होते अन्तर्यामी ॥

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥९॥

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

ना पड़ती जिन की छाया, है केवल ज्ञान की माया ॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते ॥ १० ॥

ॐ हीं छायारहित सहजातिशयसहित श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यनिर्व. स्वाहा ।
अतिशय केवल ज्ञान के, दश हैं मंगलकार ।

पाते हैं जिन देव जो, करते जग उपकार ॥ ११ ॥

ॐ हीं केवल ज्ञान समये दस अतिशय सहित श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्व.
स्वाहा ।

(तृतीय कोष्ठ)

दस प्रकार के सम्यक्त्व सम्बन्धी अर्घ्य

दोहा- दश प्रकार सम्यक्त्व का, कि ए प्रभु गुणगान ।

अर्चा करते भाव से, धारण कर श्रद्धान ॥ १ ॥

॥ तृतीय कोष्ठोपरि पुष्पाजलि क्षिपेत् ॥

(ज्ञानोदय छन्द)

शास्त्राध्ययन के बिना ही केवल, जिनवर की आज्ञा को मान ।

तत्त्वों का श्रद्धान जगाए, यह “आज्ञा” सम्यक्त्व महान ॥

कि ए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान ।

अष्टद्रव्य का अर्घ्य चढाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥ १ ॥

ॐ हीं आज्ञा सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

मोह कर्म सम्यक्त्व विनाशी, उसका जब उपशम हो जाय ।

परिग्रह रहित मुक्ति के पथ की, श्रद्धा ‘मार्ग’ सम्यक्त्व कहाय ।

कि ए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान ।

अष्टद्रव्य का अर्घ्य चढाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥ २ ॥

ॐ हीं मार्ग सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

जिनवर की वाणी आचार्यों, से सुनकर जागे श्रद्धान ।

कि ए कथन सम्यक्त का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान ।

कि ए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान ।

अष्टद्रव्य का अर्घ्य चढाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥ ३ ॥

ॐ हीं उपदेश सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

मुनियों का आचार है जिसमें, सुनकर आगम पर श्रद्धान ।

हो संक्षेप सूत्र में जो वह, ‘सूत्र’ सम्यक्त्व कहलाय महान ।

कि ए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान ।

अष्टद्रव्य का अर्घ्य चढाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥ ४ ॥

ॐ हीं सूत्र सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा. स्वाहा ।

आगम के प्रतिपादक हैं जो, बीजाक्षर को सुन श्रद्धान ।

जागे जिनके अन्तर में शशुभ, वह 'सम्यक्त्वबीज' पहिचान।
किए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्थ चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥५॥

ॐ हीं बीज सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्वपा स्वाहा।
हो संक्षिप्त पदार्थों के भी, ज्ञान में जो सम्यक् श्रद्धान।
यह 'संक्षिप्त' सम्यक्त्व कहाए, जैनागम से इसको जान।
किए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्थ चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥६॥

ॐ हीं संक्षिप्त सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्वपा स्वाहा।
द्वादशांग जिनवाणी को सुन, मन में जो जागे श्रद्धान।
यह 'विस्तार सम्यक्त्व' कहाए, जिससे पाएँ मोक्ष निधान।
किए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्थ चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥७॥

ॐ हीं विस्तार सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्वपा स्वाहा।
किसी पदार्थ को देखें या फिर, अनुभव आदिक से श्रद्धान।
होता है जो भी जीवों को, 'अर्थ सम्यक्त्व' कहाए महान।
किए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्थ चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥८॥

ॐ हीं अर्थ सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्वपा मीति स्वाहा।
द्वादशांग या अंग बाह्य श्रुत, ज्ञान का अनुभव होय अशेष।
पूर्ण पदार्थों का श्रद्धानी, 'गाढ सम्यक्त्व' होय विशेष।
किए कथन सम्यक्त का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्थ चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥९॥

ॐ हीं गाढ़ सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्वपा स्वाहा।
केवलज्ञान के द्वारा होवे, हैं पदार्थ प्रत्यक्षप्रमाण।
जिससे हो श्रद्धान कहाए, 'परमावगाढ़' सम्यक्त्व महान।
किए कथन सम्यक्त्व का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्थ चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥१०॥

ॐ हीं परमावगाढ़ सम्यक्त्व प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्थ निर्व. स्वाहा।
दश सम्यक्त्व के भेद बताए, जैनागम में महति महान।
जिनको पाने वाला बनता, अत्य समय में ही भगवान।
किए कथन सम्यक्त का श्री जिन, उनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्थ चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥११॥

ॐ हीं सम्यक्त्व दस भेद प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्थ निर्व. स्वाहा।

(चतुर्थ कोष्ठ)

दस प्रकार के करण सम्बन्धी अर्घ्य

दोहा- दश करणों से जीव यह, भूमण करे संसार ।

श्रीजिन की अर्चा किए, होवे भव से पार ॥

॥ चतुर्थ कोष्ठोपरि परिपुष्यांजलि क्षिपेत ॥

(शम्भू छन्द)

जीव कर्म का क्षीर नीर सम, एक मेक होना सम्बन्ध ।

जैनागम में प्रथम करण है, जिनवर कहते जिसको 'बन्ध' ॥

करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्रीजिन तीर्थेश ।

श्रीजिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥१॥

ॐ हीं बन्ध करण स्वरूप प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा. स्वाहा ।

पूर्व बद्ध जो कर्म समय पर, फल देना करते आरम्भ ।

जैनागम में 'उदय' कहा ए, 'विशद' ध्यान कर लो प्रारम्भ ॥

करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्रीजिन तीर्थेश ।

श्रीजिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥२॥

ॐ हीं उदय करण स्वरूप प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

कर्म बन्ध हो जाने पर भी, फल जब तक ना होवे प्राप्त ।

'सत्त्वकरण' यह कहा शास्त्र में, ऐसा कहते हैं जिन आप्त ॥

करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्रीजिन तीर्थेश ।

श्रीजिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥३॥

ॐ हीं सत्य करण स्वरूप प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

पूर्व बद्ध कर्मों की स्थिति, और बद्ध भाई अनुभाग ।

'उत्कर्षण' यह करण कहा ए, इससे मत करना अनुराग ॥

करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्रीजिन तीर्थेश ।

श्रीजिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥४॥

ॐ हीं उत्कर्षण करण स्वरूप प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.

स्वाहा ।

पूर्व बद्ध कर्मों की स्थिति, और घटे भाई अनुभाग ।

'अपकर्षण' यह करण कहा ए, राग पूर्णतः करदो त्याग ॥

करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्रीजिन तीर्थेश ।

श्रीजिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥५॥

ॐ हीं अपकर्षण करण स्वरूप प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।



कर्म की उत्तर प्रकृतियों में, परिवर्तन 'संक्रमण' कहाय ।
 आयूदर्शन मोह छोड़कर, शेष में हो यह कहे जिनाय ॥
 करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्री जिन तीर्थेश ।
 श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥६ ॥

ॐ हीं 'संक्रमण' करण स्वरूप प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 बद्ध कर्म का समय से पहले, उदय में लाकर फल का धोग ।
 यह 'उदीरणा' करण कहाए, ऐसा कहते जानी लोग ॥
 करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्री जिन तीर्थेश ।
 श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥७ ॥

ॐ हीं उदीरणा करण स्वरूप प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 कर्मादय के फल की शक्ति, को दबाव करके उपशांत ।
 करने को 'उपशम' कहते हैं, भाव करो तुम अपने शांत ॥
 करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्री जिन तीर्थेश ।
 श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥८ ॥

ॐ हीं उपशम करण स्वरूप प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 बद्ध कर्म जिसकी उदीरणा और संक्रमण भी ना होय ।
 करण 'निधत्ती' में उत्कर्षण, अपकर्षण सम्भव है सोय ॥
 करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्री जिन तीर्थेश ।
 श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥९ ॥

ॐ हीं निधत्ती करण स्वरूप प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 बद्ध कर्म जिसमें उत्कर्षण, और संक्रमण ना हो पाय ।
 ना उदीरण और संक्रमण, होय 'निकाचित' करण कहाय ॥
 करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्री जिन तीर्थेश ।
 श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥१० ॥

ॐ हीं निकाचित करण स्वरूप प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।
 कर्म के फल वाविपाक का, वर्णन कीन्हा भली प्रकार ।
 ऐसा जान हिताहित का तुम, नित्य निरन्तर करो विचार ॥
 करण कहे दश जैनागम में, कथन किए श्री जिन तीर्थेश ।
 श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, भाव सहित हम यहाँ विशेष ॥११ ॥

ॐ हीं करण दस भेद प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्वपा. स्वाहा ।

(पंचम कोष्ठ)

जीव के दस प्राण सम्बन्धी अर्घ्य

दोहा- द्रव्य प्राण दश जीव के, बतलाए भगवान् ।

विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं व्याख्यान ॥

।। पंचम कोष्ठोपरि परिपुष्टांजलि क्षिपेत ॥
(पाइता छन्द)

छूकर वस्तु को जाने, 'स्पर्शन' इन्द्रिय माने ।

जो द्रव्य प्राण कहलाए, संसारी प्राणी पाए ॥1॥

ॐ हीं स्पर्शन इन्द्रिय प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

चखने से स्वाद जो पाए, 'रसना इन्द्रिय' कहलाए ।

जो द्रव्य प्राण कहलाए, संसारी प्राणी पाए ॥2॥

ॐ हीं रसना इन्द्रिय प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

जो गंध ग्रहण को पाए, 'घाणेन्द्रिय' यही कहाए ।

जो द्रव्य प्राण कहलाए, संसारी प्राणी पाए ॥3॥

ॐ हीं घाणेन्द्रिय प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

रंगों का ज्ञान कराए, 'चक्षु इन्द्रिय' कहलाए ।

जो द्रव्य प्राण कहलाए, संसारी प्राणी पाए ॥4॥

ॐ हीं चक्षु इन्द्रिय प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा. स्वाहा ।

जो ग्रहण करे ध्वनि भाई, वह 'कर्णेन्द्रिय' कहलाई ।

जो द्रव्य प्राण कहलाए, संसारी प्राणी पाए ॥5॥

ॐ हीं कर्णेन्द्रिय प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

चेतन की शक्ति जानो, मन के द्वारा हो मानो ।

'मन बल' ये प्राण कहाए, पंचेन्द्रि प्राणी पाए ॥6॥

ॐ हीं मन बल प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

चेतन की शक्ति जगाए, वचनों से जो प्रगटाए ।

'बल वचन' प्राण कहलाए, त्रस प्राणी इसको पाए ॥7॥

ॐ हीं वचन बल प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रवृत्ति काय से पाए, चेतन की शक्ति जगाए ।

'बल काय' प्राण कहलाए, संसारी प्राणी पाए ॥8॥

ॐ हीं काय बल प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जो श्वास ग्रहण कर जावे, प्रश्वास छोड़ता जावे ।

शक्ति यह प्राणी पाए जो, 'श्वासोच्छ्वास' कहाए ॥9॥

ॐ हीं श्वासोच्छ्वास प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा.स्वाहा ।

नर नरक देव पशु जानो, आयू ये चारों मानो ।

'आयू ये प्राण' कहाए, यह जीव निरन्तर पाए ॥१०॥

ॐ हीं आयु प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
यह पाँच इन्द्रियाँ भाई, बल तीन आयु बतलाई ।

अरु श्वाशो च वास बताए, दश दब्य प्राण ये गाए ॥११॥

ॐ हीं दस प्राण प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पञ्चम कोष्ठ

दब्य के सामान्य दश गुण सम्बन्धी अर्घ्य

दोहा- दब्य के दश सामान्य गुण, बतलाए तीर्थश ।

करते हैं गुण गान हम, जिनका यहाँ विशेष ॥

॥ पञ्चम कोष्ठो परिपुष्टां जलि क्षिपेत ॥

(मोतियादाम छन्द)

दब्य में गुण का होवे वास, कभी ना होवे दब्य विनाश ।

कहा गुण यह "अस्तित्व प्रधान", दब्य की हो जिससे पहिचान ॥१॥

ॐ हीं अस्तित्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा स्वाहा ।

दब्य में गुण ये रहे महान, अर्थ क्रिया जिससे हो यह मान ।

कहा गुण यह "वस्तुत्व" विशेष, कहे केवल ज्ञानी तीर्थश ॥२॥

ॐ हीं वस्तुत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा स्वाहा ।

दब्य का गुण है यह शुभकार, रहा परिवर्तन का आधार ।

रहा गुण यह "दब्यत्व" महान, दब्य की हो जिससे पहिचान ॥३॥

ॐ हीं दब्यत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा स्वाहा ।

दब्य का गुण यह जानो सोय, ज्ञान का दब्य विषय जो होय ।

रहा "प्रमेयत्व" भी गुण शुभकार, जानिए जिसको भली प्रकार ॥४॥

ॐ हीं प्रमेयत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा स्वाहा ।

दब्य में हो गुण यह पहिचान, दब्यता दब्य की निज स्थान ।

रहे गुण ऐसा दब्य में होय, 'अगुरुलघु गुण' कहलाए सोय ॥५॥

ॐ हीं अगुरुलघु गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा स्वाहा ।

दब्य का वह गुण जिसको पाय, दब्य जिससे आकार बनाय ।

दब्य का गुण 'प्रदेशत्व' विशेष, बताए हैं जग का तीर्थश ॥६॥

ऊँ हीं प्रदेशत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा स्वाहा ।

दब्य होता है 'चेतन वान', रहा गुण यह तो महति महान ।

कहा गुण यह सामान्य विशेष, जीव पाते चेतनत्व अशेष ॥७॥

ॐ हीं चेतनत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'अचेतन' गुण दब्यों में जान, कहा सामान्य विशेष महान ।

द्रव्य जो जीव से रहित अशेष, सभी में हो कहते तीर्थैश ॥४॥

ॐ हीं अचेतनत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

द्रव्य होता है 'मूर्तीमान', द्रव्य का यह भी गुण पहिचान ।

रहा गुण यह सामान्य विशेष, पाए यह पुदगल द्रव्य अशेष ॥५॥

ॐ हीं मूर्तत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अमूर्त गुण' भी द्रव्यों में होय, नहीं रुकता जो रोके सोय ।

रहा गुण यह सामान्य विशेष, अमूर्तत्व कहते जिन तीर्थैश ॥६॥

ॐ हीं अमूर्तत्व गुण प्रकाशकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा ।

द्रव्य में गुण दश रहे महान, किया यह शशास्त्रों में व्याख्यान ।

मिले निज का जिससे शुभ ज्ञान, हृदय में जागे तब श्रद्धान ॥७॥

ॐ हीं द्रव्यस्य दस भेद प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपा. स्वाहा ।

(सप्तम् कोष्ठ)

धर्म ध्यान के दस भेद सम्बन्धी अर्घ्य

दोहा- कथन किए जिन राज यह, दश है धर्म ध्यान ।

धारण करके जीव यह, पावे पद निर्वाण ॥

॥ सप्तम् कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत ॥

(चाल छन्द)

जो धर्म के आज्ञाकारी, हों वीतराग अनगारी ।

चिन्तन में चित्त लगाए, जो 'आज्ञा विचय' कहाए ॥१॥

ॐ हीं आज्ञा विचय धर्म ध्यान प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब जीव दुखी संसारी, उनके जो दुःख निवारी ।

चिन्तन में चित्त लगाए, जो 'अपाय विचय' कहलाए ॥२॥

ॐ हीं अपाय विचय धर्म ध्यान प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

आतम कल्याण का भाई, करता उपाय शिवदायी ।

चिन्तन करता शुभकारी, हो 'उपाय विचय' का धारी ॥३॥

ॐ हीं उपाय विचय धर्म ध्यान प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

स्वरूप जीव का जानो, चिन्तन करता जो मानो ।

चिन्तक वह श्रेष्ठ कहाए, जो 'जीव विचय' को ध्याये ॥४॥

ॐ हीं जीव विचय धर्म ध्यान प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

जो द्रव्य अजीव कहाए, उनके स्वरूप को ध्याये ।

चिन्तन अजीव का जानो, ये अजीव विचय 'पहिचानो ॥५॥

ॐ हीं अजीव विचय धर्मध्यान प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।



संसार है ये दुखकारी, इसका स्वरूप मनहारी ।

‘भव विचय’ ध्यान कहलाए, ऐसा चिन्तन जो पाए ॥६॥

ॐ ह्रीं भव विचय धर्म ध्यान प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

स्वरूप कर्म का ध्याए, फल उसका प्राणी पाए ।

चिन्तन ऐसा शुभकारी, हों विपाक विचय ‘का धारी ॥७॥

ॐ ह्रीं विपाक विचय धर्मध्यान प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

संसार असार कहाए, वैराग्य वृद्धि को पाए ।

जो देह ममत्व का त्यागी, हो ‘विराग विचय’ अनुरागी ॥८॥

ॐ ह्रीं विराग विचय धर्मध्यान प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

जो स्याद्वाद को जाने, उपादेय बताए माने ।

हों हेतु विचय ‘का धारी, ऐसा चिन्तक मनहारी ॥९॥

ॐ ह्रीं हेतु विचय धर्म ध्यान प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

गुण द्रव्य पर्याएँ पाए, जो लोकाकार को ध्याये ।

हो ऐसा चिन्तन कारी, ‘संस्थान विचय’ का धारी ॥१०॥

ॐ ह्रीं संस्थान विचय धर्मध्यान प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

यह धर्म ध्यान के भाई, दश भेद कहे शिवदायी ।

चिन्तन में चिन्त लगाए, वह शिव पदवी को पाए ॥११॥

ॐ ह्रीं धर्म ध्यानस्य दश भेद प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्व. स्वाहा ।

(अष्टम कोष्ठ)

दस धर्म सम्बन्धी अर्घ्य

धारी हैं दस धर्म के तीर्थकर भगवान ।

धर्म हृदय जागे विशद, करते हम गुणगान ॥

(अष्टम् कोष्ठोपरि पुष्टांजलि क्षिपेत)

चौपाई छन्द

अन्दर में समता उपजाई, क्रोध नहीं जो करते भाई ।

उत्तम क्षमा धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

मन में अहंकार न आवे, प्राणी समता भाव जगावे ।

मार्दव धर्म हृदय में धारे, धर्म छवजा को हाथ सम्हारे ॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपा. स्वाहा ।

कुटिल भाव मन में न आवे, सरल भाव प्राणी उपजावे ।
आर्जव धर्म हृदय में धारे, धर्म छवजा को हाथ सम्हारे ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

जिसके मन मूर्छा न आवे, जो मंतोष भाव को पावे ।

उत्तम शौच हृदय में धारे, धर्म छवजा को हाथ सम्हारे ॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तम शशौच धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

कहे बचन जो मन में होवे, असत् बचन की सत्ता खोवे ।

उत्तम सत्य हृदय में धारे, धर्म छवजा को हाथ सम्हारे ॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

इन्द्रिय मन जीते सुखदायी, प्राणी रक्षा करते भाई ।

वे हैं उत्तम संयम धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी ॥६॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति
स्वाहा ।

इच्छाओं को तजने वाले, द्वादश तप को तपने वाले ।

वे हैं उत्तम तप के धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी ॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

पर द्रव्यों से राग हटावें, मन में समता भाव जगावें ।

उत्तम त्याग धर्म के धारी, तन-मन से होते अविकारी ॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

किंचित् मन में राग न होवे, सारी इच्छाओं को खोवे ।

वे हैं आकिंचन व्रतधारी, जनजन के हैं करुणाकारी ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

जो हैं काम भोग के त्यागी, परम ब्रह्म के हैं अनुरागी ।

वे हैं ब्रह्मचर्य व्रतधारी, जन-जन के हैं करुणाकारी ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

पाते हैं दश धर्म शुभ, तीर्थकर भगवान ।

जिनको पाकर जीव सब, पाते हैं निर्वाण ॥११॥

ॐ ह्रीं दस धर्म प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(नवम् कोष्ठ)

दस प्रकार के परिग्रह निवारण सम्बन्धी

दोहा- रहित परिग्रह से कहे, तीर्थकर भगवान् ।
जिनकी अर्चा कर यहाँ, करते हैं बहुमान ॥

(नवम् कोष्ठोपरि पुष्ट्यांजलि क्षिपेत)
(जोगीरासा छन्द)

जो खेती की भूमि पावे, 'क्षेत्र परिग्रह' धारी ।
हिंसादिक पापों का संग्रह, करता है वह भारी ॥
परिग्रह पाप रहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥1॥

ॐ हीं क्षेत्र परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
कोठी बंगला महल बनावे, 'वास्तु परिग्रह' धारी ।
स्वयं जिन्दगी बिता देय जो, उसमें अपनी सारी ॥
परिग्रह पाप रहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥2॥

ॐ हीं वास्तु परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
चाँदी रूपया पैसा आदिक, की जो आस जगावे ।
'हिरण्य परिग्रह' धारी प्राणी, इस जगमें भटकावे ॥
परिग्रह पाप रहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥3॥

ॐ हीं हिरण्य परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
सोने के आभूषण आदिक, पाके हर्ष मनावे ।
'स्वर्ण परिग्रह' धारी मानव, क्लेश हृदय में पावे ॥
परिग्रह पाप रहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥4॥

ॐ हीं स्वर्ण परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
गाय भैंस घोड़ा आदिक पशु, पालन कर हर्षावे ।
'धन परिग्रह' का धारी मानव, चारों गति भटकावे ॥
परिग्रह पाप रहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥5॥

ॐ हीं धन परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
धान्य विविध लेकर के, कोठे भरता है जो भाई ।
'धान्य परिग्रह' धारी प्राणी, माने निज प्रभुताई ॥
परिग्रह पाप रहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।

जिनके चरणों अर्ध्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥६॥
ॐ हीं धान्य परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

सेवा हेतु नौकर चाकर, अपने पास बुलावे ।

'दास परिग्रह' धारी श्रावक, कर्म बन्ध को पावे ॥

परिग्रह पापरहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।

जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥७॥

ॐ हीं दास परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
स्त्री दासी आदिक से जो, सेवा स्वयं करावे ।

'दासी परिग्रह' धारी प्राणी, भव बन में भटकावे ॥

परिग्रह पापरहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।

जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥८॥

ॐ हीं दासी परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
नये-नये कपड़े पाकर जो, अपनी शान बढ़ावे ।

'कृष्ण परिग्रह' धारी होके, कर्म बन्ध को पावे ॥

परिग्रह पापरहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।

जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥९॥

ॐ हीं कृष्ण परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
बर्तन भाड़े भाँति-भाँति के, पाने वाला प्राणी ।

'भाण्ड परिग्रह' धारी है वह, कहती है जिनवाणी ॥

परिग्रह पापरहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।

जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥१०॥

ॐ हीं भाण्ड परिग्रह त्याग प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।
धेद परिग्रह के दश गाए, होय परिग्रह धारी ।

भटके चारों गतियों में ही, होकर के अज्ञानी ॥

परिग्रह पापरहा दुखकारी, श्री जिनेन्द्र यह गाए ।

जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाने, विशद यहाँ हम आए ॥११॥

ॐ हीं परिग्रहस्य दसभेद प्रवक्ता श्रीतीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्व. स्वाहा ।

दशम् कोष्ठ

दस प्रकार का सत्य सम्बन्धी

दोहा- दश प्रकार का सत्य है, प्रभु हैं जिसके ईश ।

जिनकी अर्चा को यहाँ, झुका रहे पद शीश ॥

(दशम् कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)



(कृत्यपलता छन्द)

विविध प्रदेशों में प्रसिद्ध जो, भाषा सांकेतिक अनुसार ।
ऐसे बचन कहे सो जानो, 'जनपद सत्य' विणाव मनहार ॥
गच्छतीति गौ गजातीति गज, इस निरुक्ति से अर्थ विचार ।
शब्द विवक्षित जानो फिर भी, है निमित्त शब्दों अनुसार ॥१॥

ॐ ही जनपद सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।
सम्पति शब्द सुआकृति बोधक, शुभ लक्षण संयुक्त महान् ।
ज्यों राजेन्द्र गजेन्द्र कहावे, 'सम्पति सत्य' कहे भगवान् ॥
राजा राणा आदिशब्द सब, सम्पति शब्द समिति के जान ।
जिनवाणी में कथन किया है, बतलाए यह सम्प्रकृत्यान् ॥२॥

ॐ ही सम्पति सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।
जिनमूर्ती स्थापित करके, उसमें यह निश्चय हो जाय ।
अर्हत सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधू परमेष्ठी कहलाय ॥
इस प्रकार का कथन रहा जो है, 'स्थापना सत्य' महान् ।
स्थापित जिनबिष्ट लोक में, जिनका हम करते गुणगान ॥३॥

ॐ ही स्थापना सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।
जति द्रव्य गुण क्रिया अपेक्षा, बिन शब्दों का उच्चारण ।
इस प्रकार व्याहार क्रिया है, 'नाम सत्य' यह रहा कथन ॥
नाम मात्र ज्यों महावीर सम, गुण जाती पर दृष्टि ना जाय ।
जैनागम अनुसार कथन यह, नाम सत्य भाई कहलाय ॥४॥

ॐ ही नाम सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मुख्य वर्ण से जो निर्मित है, रूप सत्य कहते जिनदेव ।
नील वर्ण अम्बुज को लखके, नीलाम्बुज जग कहे सदैव ॥
'रूप सत्य' यह कहते भाई, जैनागम में जिन तीर्थेश ।
जीव मानते सभी लोक में, रूप सत्य को सभी विशेष ॥५॥

ॐ ही रूप सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
हस्त दीर्घ यह धार अपेक्षा, एक दूसरे के प्रति जान ।
यह लघु अरु वह दीर्घ कहाए, पर लघु दीर्घ ना कोई प्रधान ॥
इस प्रकार का कथन रहा जो, जिससे चलता है व्यवहार ।
'सत्य प्रतीति' कहाये पावन, अनुपम जैनागम अनुसार ॥६॥

ॐ ही सत्य प्रतीति प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
शक्य असक्य भेद द्वय विधि से, कहा सत्य सम्भावन सार ।
जैसे पुरुष भुजाओं से यह, निज शक्ति से करता पार ॥
अथवा निजकर द्वीप उठावे, शिर से फोड़े करें प्रहार ।
ये सम्भावना' शब्द सत्य है, कहे जैन आगम अनुसार ॥७॥

ॐ हीं सम्भावना सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

वर्तमान में नहीं यद्यपि, भूतकाल में था यह जान ।

और भविष्यत में होवेगा, यह सब है व्यवहार प्रमाण ॥

जैसे आटा पीसो ये लच्छ, सब 'व्यवहार सत्य' के जान ।

जैनागम में कथन किया ये, पावन तीर्थकर भगवान ॥८॥

ॐ हीं व्यवहार सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

वचन कहे जावें उपमा के, उपमा सत्य यहाँ कहलाय ।

जैसे पत्न्य और सागर की, उपमा गड्ढ में दी जाय ॥

ज्ञानी जीवों के द्वारा यह, सत्य वचन सब कहे प्रमाण ।

'उपमा सत्य' लोक में प्रचलित, भविजीवों मेरहा महान ॥९॥

ॐ हीं उपमा सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

हिन्सादिक पापों से बर्जित, ऐसा भाव सत्य शुभ जान ।

होते हुए चार घर माँही, कहे नहीं हैं कहत प्रमाण ॥

'भाव सत्य' कहलाए भाई, पावन जैनागम अनुसार ।

जिसका सत्य स्वरूप समझकर, भाई करो सत्य व्यवहार ॥१०॥

ॐ हीं भाव सत्य प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जनपद सम्मति नाम स्थापना, रूप सत्य गाया स्थान ।

उपमा भाव सत्य यह जानो, दश प्रकार का रहा महान ॥

तीर्थकर यह कथन किए हैं, नय प्रमाण से महति महान ।

श्रीजिनेन्द्र पद अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान ॥११॥

ॐ हीं दसं सत्य भेद प्ररूपकाय श्री तीर्थकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्व. स्वाहा ।

जाप- ॐ हीं अक्षयफल प्रदायक श्री ऋषभदेवाय नमः

जयमाला

दोहा- व्रत सौभाग्य दशमी रहा, मंगल मयी महान ।

भाव सहित जो भी करें, पावें शिव सोपान ॥

(वीर छन्द)

पूर्व पुण्य के प्रबलयोग से, करते तीर्थकर पद प्राप्त ।

कर्म धातिया नाशी जिन को, अनन्त चतुष्टय हाँ सम्प्राप्त ॥

रत्नत्रय को धारण करके, उत्तम संयम तप को धार ।

शिव पथ के राही बनकरके, कर्म निर्जरा करें अपार ॥ ११॥

निज स्वभाव में लीन हुए तब, प्रभु जी ध्याये शुक्ल ध्यान ।

मोहनीय क्षय कर प्रगटाया, यथा ख्यात चारित्र महान ॥

फिर एकत्व वितर्क ध्यान कर, प्रगटाए प्रभु के दलज्ञान ।

लोकालोक ज्ञान में प्रभु जी, दर्शाए प्रतिविम्ब समान ॥१२॥



गुणानन्त के धारी चिन्मय, चेतन चन्द्र अपूर्व महान ।
 समवशरण में शोभापाए, राग रहित जिन आभावान ॥
 तन्मय होकर निज वैभव में, भोगे प्रभु आनन्द अपार ।
 समवशरण सौभाग्य प्रदायक, भव्य जीव का शरणागार ॥३॥
 सदा बरसती श्री जिनमुख से, चिदानन्दमय अमृत धार ।
 सभी ज्ञान में ज्ञेय इग्लकाते, नहीं ज्ञेय के जो आधार ॥
 जहाँ धर्म की वर्षा होते, समवशरण वह मंगलकार ।
 कल्पतरु सम भवि जीवों को, रहा लोक में शुभ आधार ॥४॥
 इन्द्र राज की आज्ञा पाकर, धनपति रचना करे महान ।
 निज की कृति ही भाषित होते, समवशरण वह मंगलकार ॥
 दर्शअनन्त ज्ञान सुख बल से, सदा सुशोभित हो जिनराज ।
 चाँतिस अतिशय प्रातिहार्ययुत, विशद ज्ञान के होते ताज ॥५॥
 वैभव अनन्तर्बाह्य निरखकर, भव्य लहें आनन्द अपार ।
 प्रभु के चरण कमल में वन्दन, कर पाएँ नर सौख्य अपार ॥
 कृत्रिम रचना समवशरण की, करें देव अतिशय शुभकार ।
 जिन बिम्बों को स्थापित कर, पूजा करते मंगलकार ॥६॥
 दोहा- अर्चा श्री जिनदेव की, करते हैं जो जीव ।
 विशद भाव से जीव वे, पाते पुण्य अतीव ॥

ॐ हीं अर्ह श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
 दोहा- व्रत करते हैं जीव जो, मन में श्रद्धाधार ।
 इस भव के सुख भोग वे, पाते भव से पार ॥
 ॥ इत्याशीर्वाद ॥

ॐ हीं अर्ह परम शीतलता प्रदायक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा ।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे
 नन्दी संधस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति
 आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जास्तत्
 शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बू द्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे
 राजस्थान प्रान्ते जयपुर पुर बस्तुणपथ श्री महावीर जिनालय मध्ये वी.नि. सं.
 2542 वि.स. 2073 कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे पंचमी सोमवासरे श्री अष्टावफल
 दशमी विद्यान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात् ।